भूमिका

माँ के हृदय से प्रस्फुटित ममता लोरी के रूप में प्रवाहित होती रहती है, जो वात्सल्यता से लबालब होती है और इसके सींचन से शिशु का मन-मस्तिष्क संपोषित होता है। माताएँ द्वारा बच्चों को सुलाने के लिए जो गीत गाया जाता है, उसे लोरी की संज्ञा दी गई है। लोरी के माध्यम से बच्चे का मन बहला कर एकाग्रचित किया जाता है, जिससे उसे नींद आ जाती है तथा वह सो जाता है। दरअसल शिशु को पालने में लेटा कर झुलाया जाता है, साथ-साथ लोरी की मीठी धुनें चलती रहती हैं, शिशु के जीवन की मंगलकामनाएँ की जाती हैं। कभी-कभी लोरी में शिक्षापरक बातें भी शामिल होती हैं। लोरी का कथ्य सरल व सहज होता है। इसमें बहुत सारी अटपटी बातें भी होती हैं। लोरी में लय की प्रधानता होती है तथा इसका सीधा संबंध लोक से होता है। इसका सर्जक व संपोषक लोक होता है। अतः लोरी मूलतः साहित्य का हिस्सा होता है। लोक साहित्य किसी खास क्षेत्र की बोली व भाषा में होता है। चकाचौंध से भरे इस यांत्रिक युग में दिन-प्रतिदिन लोरी का ह्रास हो रहा है। इस व्यस्तता भरी भागदौड़ की जिंदगी में माता के पास लोरी सुनाने का वक्त नहीं है। लोरी की अपनी एक समृद्ध परंपरा रही है। भारत के विभिन्न भाषाओं एवं बोलियों में लोरी की धुनें अनुगुंजित होती आ रही हैं।

प्रस्तु लघु शोध-प्रबंध- 'हिंदी लोरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन' के अंतर्गत हिंदी की बोलियों की लोरियों को शामिल किया गया है जिसमें हिंदी प्रदेश की विविध संस्कृतियों की झलक मिल रही है। इस लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला अध्याय 'लोक एवं लोक साहित्य : एक परिचय' है, जिसमें लोक किसे कहते हैं, उसे स्पष्ट करने की कोशिश की गई है तथा लोक साहित्य क्या है, इसकी सर्जना कैसे होती है; इस पर विचार किया गया है।

दूसरा अध्याय 'संस्कृति एवं लोक-संस्कृति : एक विवेचन' है जिसके अंतर्गत संस्कृति एवं लोक संस्कृति को विश्लेषित किया गया है।

तीसरा अध्याय 'लोकगीत एवं बाल लोकगीत : एक परिचय' है जिसमें लोकगीत क्या है, इसकी क्या विशेषताएँ हैं; इनका संक्षिप्त वर्गीकरण किया गया है, साथ ही बाल लोक गीत की चर्चा की गई है।

चौथा अध्या 'हिंदी लोरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन' है। इस अध्याय के अंतर्गत हिंदी की बोलियों की लोरियों की अंतर्वस्तु, उनका सौंदर्यबोध व सांस्कृतिक पक्षों पर विचार किया गया है। इस अध्ययन के अंतर्गत

हिंदी प्रदेश में व्याप्त विभिन्न बोलियों की लोरियों में समानता-असमानता व विविधताओं के अनेक रंग-रूप दिखते हैं। इसमें कई बोलियों की लोरियों के माध्यम से वहाँ के सामाजिक व सांस्कृतिक पक्षों को समझ सकते हैं।

इस लघु शोध-प्रबंध को प्रस्तुत करने तक अनेक महानुभावों का योगदान रहा है। सर्वप्रथम मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ. बीर पाल सिंह यादव के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपने सफल मार्गदर्शन व प्रोत्साहन से निरंतर ऊर्जा भरने का कार्य किया। साथ ही आभार व्यक्त करता हूँ विभागाध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह तथा अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर के प्रति, जिन्होंने अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से लाभान्वित किया।

मैं आभार व्यक्त करता हूँ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के मानविकी संकायाध्यक्ष डॉ. रामचंद्र ठाकुर का जिन्होंने मुझे सामग्री-संकलन के साथ-साथ शोध-कार्य सम्बन्धी अनेक सुझाव दिए.

उन मित्र-मंडली के प्रति बिना आभार व्यक्त किए कैसे रहा जा सकता है, जिन्होंने इस शोध-कार्य को सम्पन्न कराने में अपना सहयोग दिया है। अतः परममित्र अमित कुमार, चन्दन कुमार, रामलखन कुमार, पंचदेव प्रसाद, राहत जमाल सिद्दकी, सुश्री सागरिका नायक, तरुण कुमार, मनदीप, बुधुराम तथा कृष्णमोहन के प्रति आभार।

मैंने लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण करने के दौरान कमियों को दूर करने का प्रयास किया है, फिर भी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

रौशन कुमार